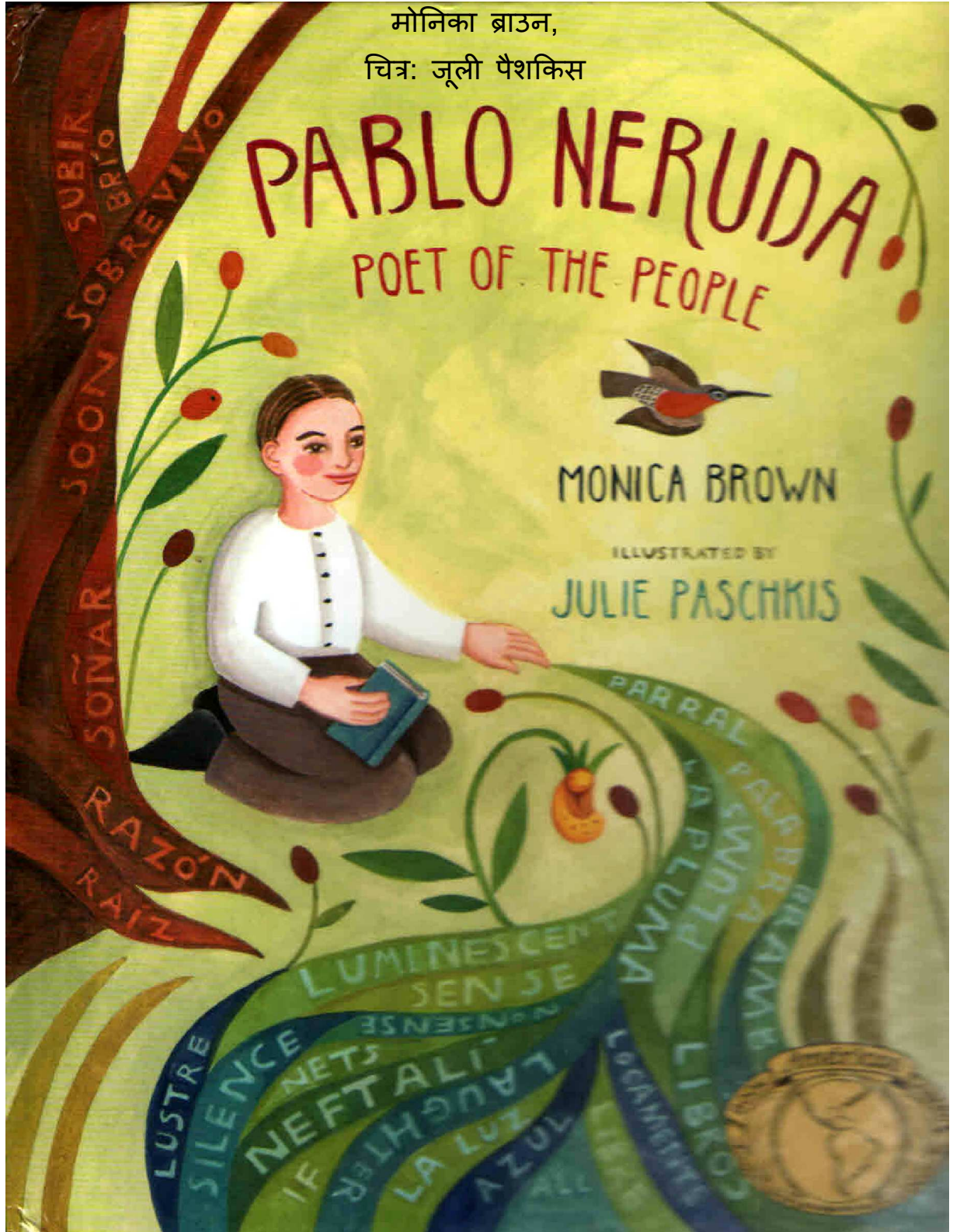


पाब्लो नेरुदा

लोगों का कवि

मोनिका ब्राउन,

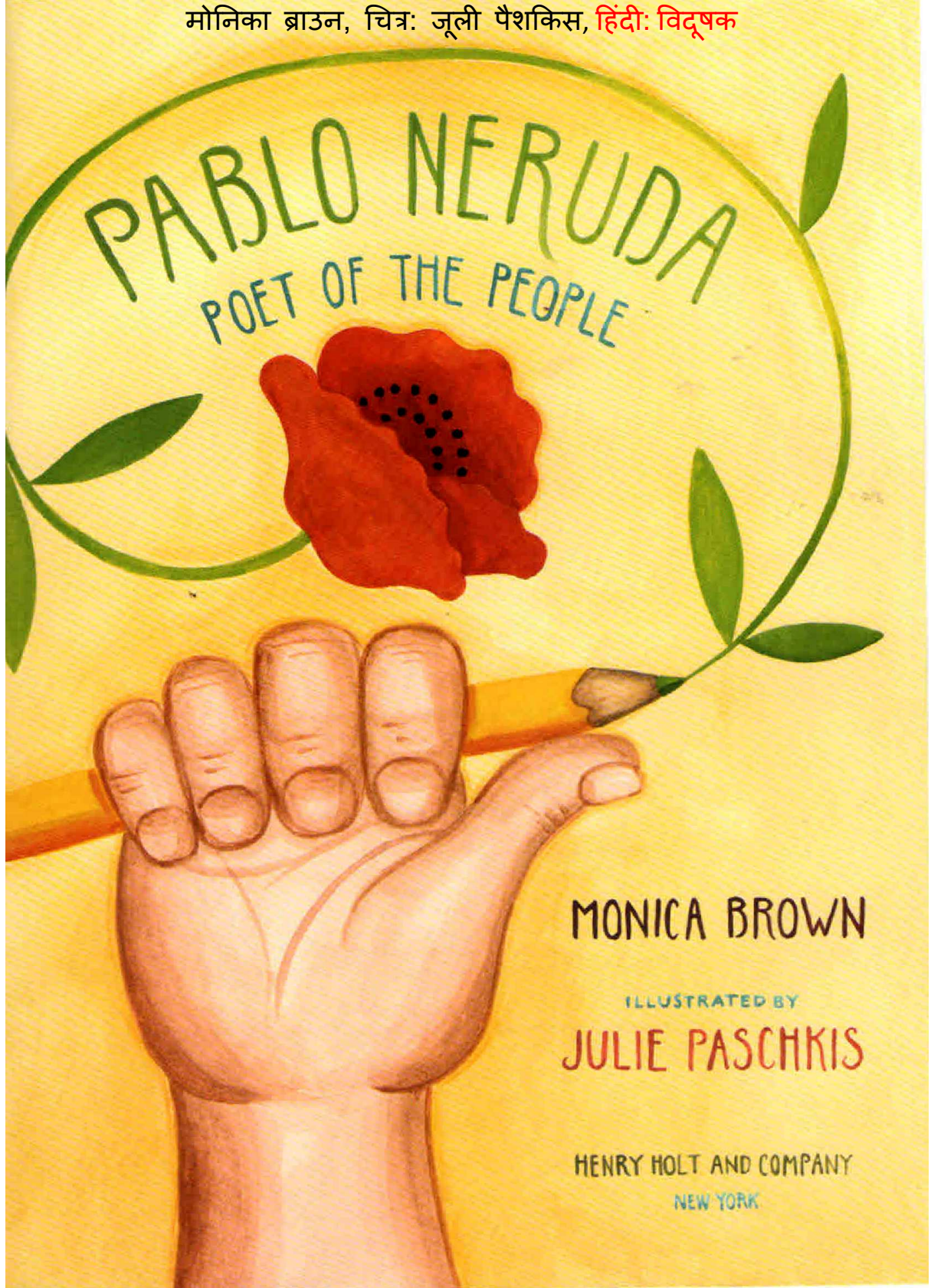
चित्र: जूली पैशकिस



पाब्लो नेरुदा

लोगों का कवि

मोनिका ब्राउन, चित्र: जूली पैशकिस, हिंदी: विदूषक





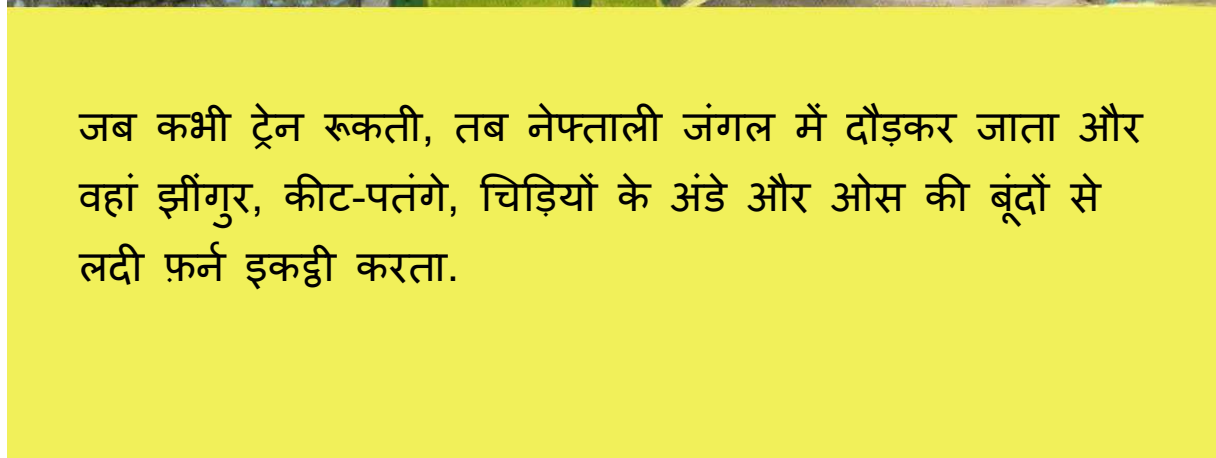
कभी एक छोटा लड़का था. उसका नाम था नेफताली.
उसे जंगली चीज़ें बेहताशा पसंद थीं.
वैसे उसे शांत चीज़ों से भी प्रेम था.



बोलना सीखने के बाद से नेफ्ताली खुद को शब्दों से घेरे रखता था। उसे ऐसे शब्द पसंद थे जो चक्कर खाते और गोल-गोल घूमते, बिल्कुल उस नदी जैसे जो चिली में उसके घर के पास से होकर गुज़रती थी।



नेफ्ताली को जंगल में खेलना, घुड़सवारी और दोस्तों के साथ नदी में तैरना सबसे ज्यादा पसंद था.
नेफ्ताली के पिता ट्रेन कंडक्टर थे. कभी-कभी वो बेटे को भी ट्रेन में अपने साथ ले जाते थे.



जब कभी ट्रेन रुकती, तब नेफ्ताली जंगल में दौड़कर जाता और वहां झींगुर, कीट-पतंगे, चिड़ियों के अंडे और ओस की बूंदों से लदी फ़र्न इकट्ठी करता.



नेफ्ताली, फुटबॉल में कमज़ोर था. वो अपने दोस्तों जैसे अन्य खेलों भी दक्ष नहीं था. पर उसे किताबें पढ़ना बेहद पसंद था. वो कहानियों के जादू में खो जाता था.



उसकी एक टीचर - गब्रिएला मिस्ट्रल उसे दुनिया-जहां की, बेहतरीन किताबें लाकर देतीं. तब नेफ्ताली ने निश्चय किया कि वो भी बड़ा होकर एक लेखक बनेगा.



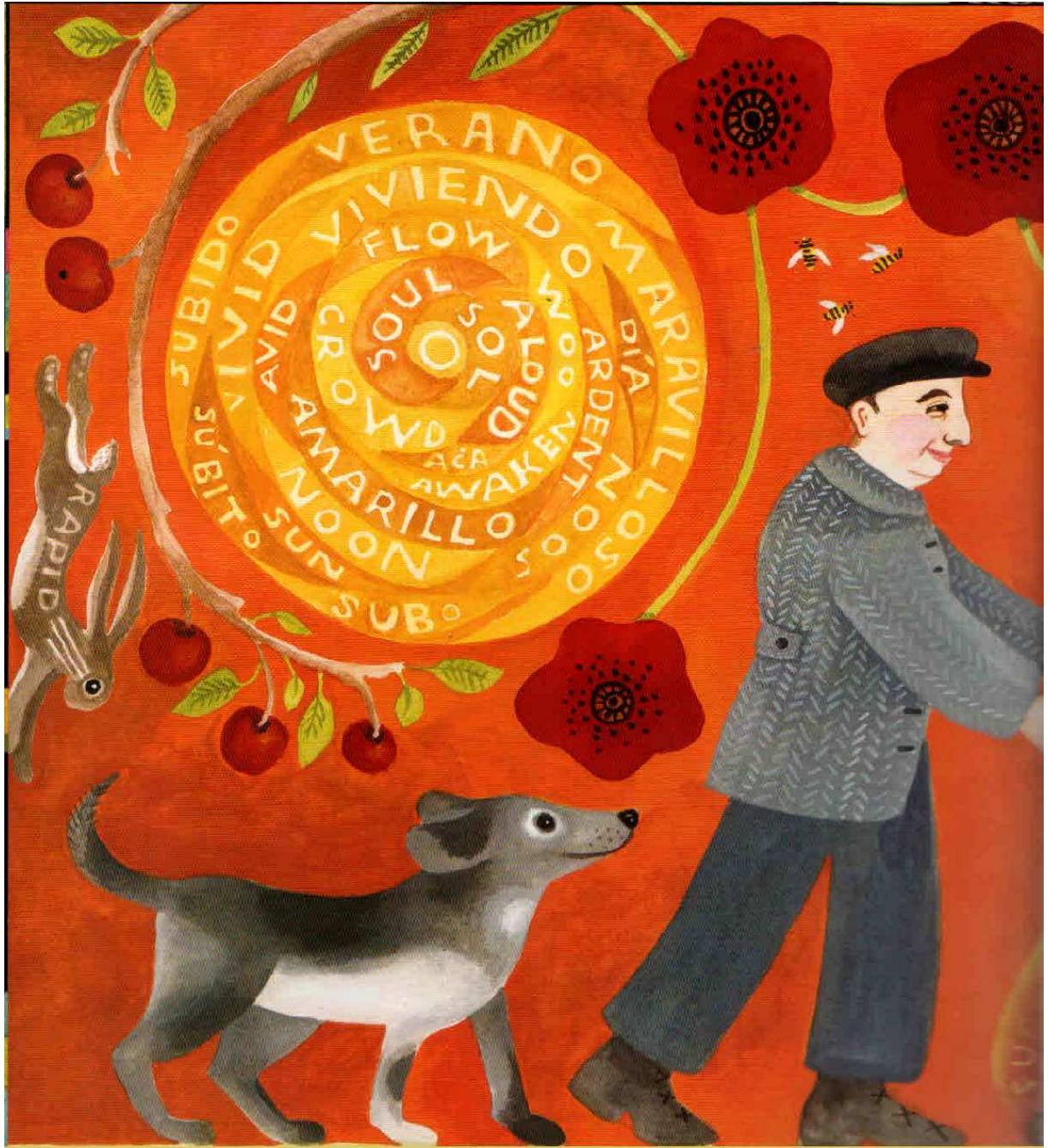
किशोर अवस्था में ही नेफ्ताली ने अपना नाम बदलकर पाब्लो नेरुदा रखा. और उसी नाम से वो कवितार्यें लिखने लगा. लिखते समय वो हमेशा हरे रंग की स्याही का ही इस्तेमाल करता था. क्योंकि हरा रंग फ़र्न का रंग था, और उसके पैर के नीचे की घास का रंग था, इसलिए उसे हरा रंग ही पसंद था.



फिर पाब्लो सेंटिआगो शहर में आ बसा. वहां उसकी मुलाकात अन्य लेखकों से हुई. लेखकों के साथ मिलकर पाब्लो शहर की सड़कों के चक्कर लगाता. वे सभी बड़ी और ऊंची काली टोपियाँ पहनते थे. चलते-चलते उन्हें जो भी मिलता वो उसे अपनी कवितायें सुनाते और उन्हें किताबों के बारे में बताते.



वो कैंची, दर्जियों की ऊंगली बचाने वाली टोपी, कुर्सियों और अंगूठियों पर कवितायें लिखता। उसने बटन, पंख, जूतों और टोपियों पर भी कवितायें लिखीं। उसने मखमल के कपड़े और समुद्र के रंग के बारे में भी कवितायें लिखीं।



पाब्लो को विरोधी बातें पसंद थीं - इसलिए उसने आग और बारिश पर, वसंत और पतझड़ के बारे में भी लिखा.



सड़कों पर टहलते और मित्रों के बीच उसे खुशी और दुःख दोनों का अनुभव हुआ. इसलिए उसने दोनों के बारे में लिखा.



पाब्लो को चिली के पत्थरों से विशेष प्रेम था.

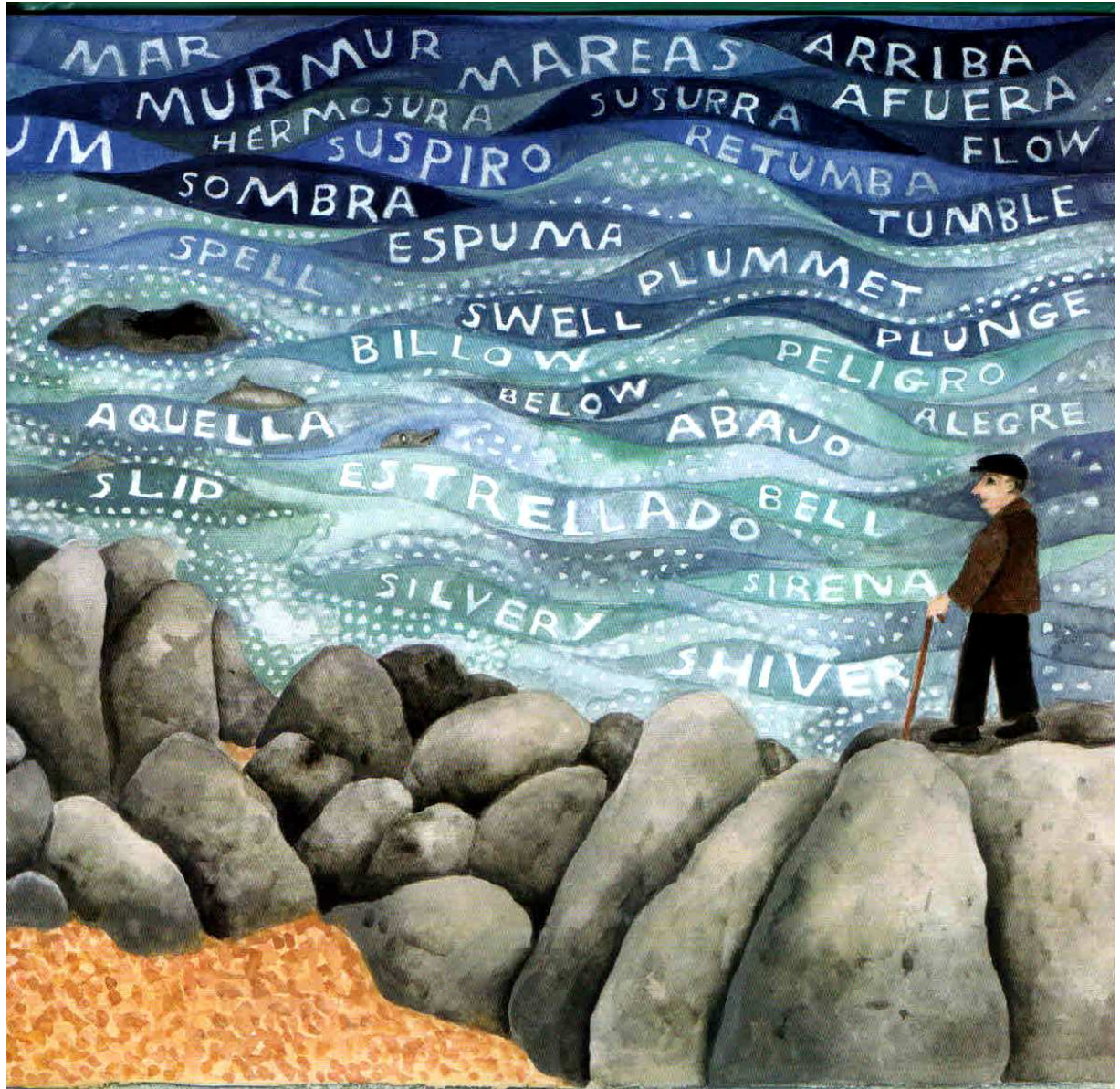
उसने लहरों द्वारा पत्थरों का लुढ़कना, रेत और नमक की घिसाई से पत्थरों की चमकीली पालिश के बारे में भी लिखा.



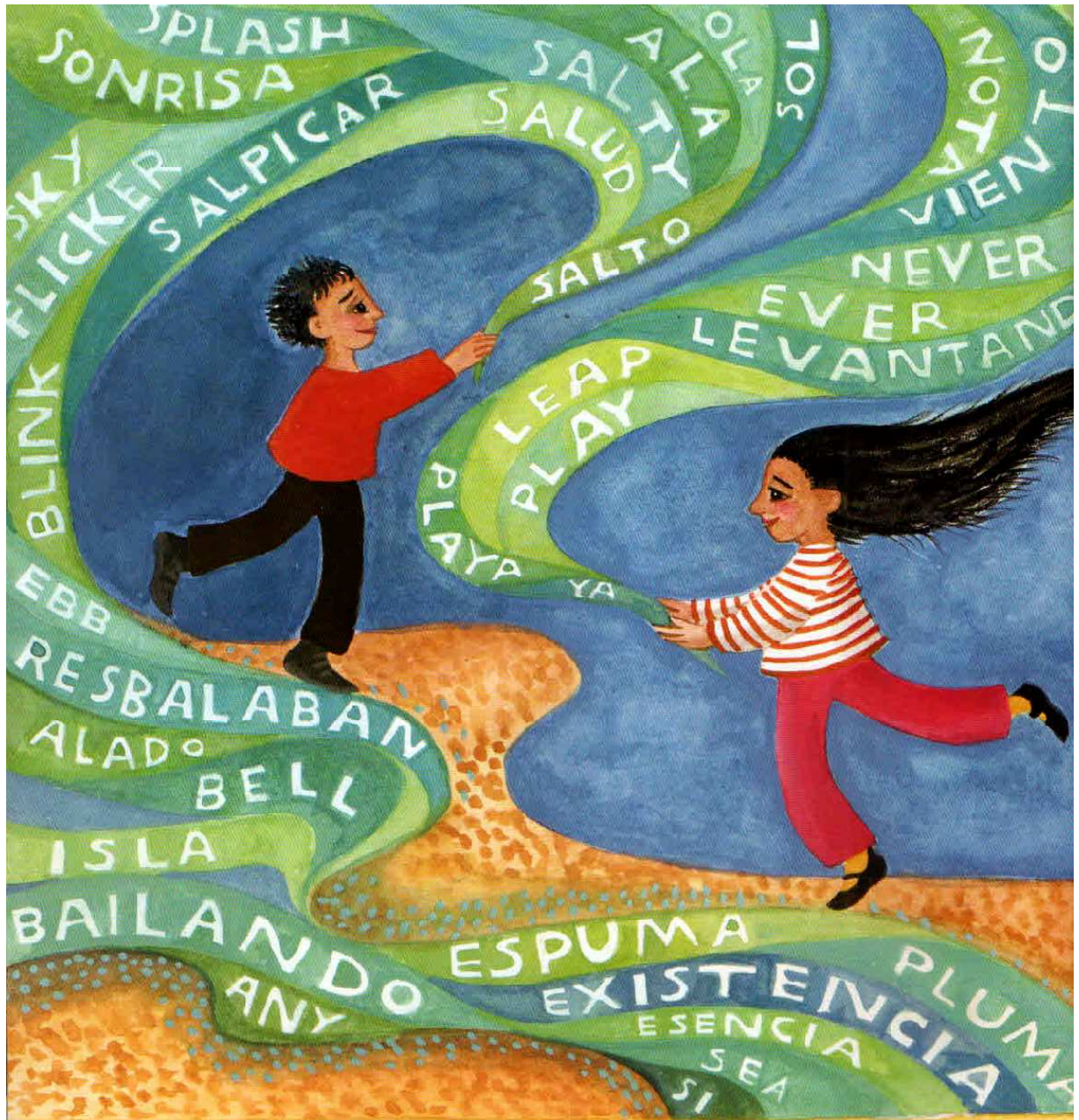
पहाड़ों से नीचे ढुलकते पत्थरों, और हाथ द्वारा छेनी-हथौड़े से तराशे पत्थरों के बारे में भी उसने लिखा.



पाब्लो को समुद्र से बहुत प्यार था. अपने पैरों के नीचे गीली रेत महसूस करते वक्त उसे बड़ा मज़ा आता था. चिली में घर के पास, समुद्र तट की सैर करने में उसे बहुत सकून मिलता था.



समुद्र में उसे स्टारफिश और सिवार (सी-वीड), लाल-केकड़े और हरा पानी दिखता था. उसे लहरों पर डॉलफिन खेलती नज़र आतीं और तट पर बहकर आये जंग लगे लोहे के लंगर दिखाई देते.



समुद्र के फेन और रेत से खेलते, पत्थरों पर कूदते और लहरों को पकड़ते बच्चों के बारे में भी पाब्लो ने लिखा.



पाब्लो चाहता था कि हरेक बच्चे का चिली की सम्पदा
और उम्मीद में हिस्सा हो.



पाब्लो के कई घर थे. उसका एक घर आधी दुनिया दूर स्पेन में था. इस घर का नाम था “फूलों का घर” क्योंकि उस घर के हर कोने में लाल रंग के फूल खिलते थे.

“फूलों का घर” हमेशा कुत्तों, युवा और बूढ़े लोगों से भरा रहता था.



क्योंकि पाब्लो नेरुदा को चीज़ों और शब्दों से भी अधिक प्यार था लोगों से.

पाब्लो को माता, पिता, कवि और आर्टिस्ट, बच्चे और पड़ोसी, और दुनिया भर में फैले अपने दोस्तों से प्यार था.

उनके स्वागत में उसके हाथ हमेशा फैले रहते.



जब पाब्लो ने कोयला खदानों में मजदूरों को बहुत कम वेतन पर श्रम करते देखा तो उसे गुस्सा आया. जब उसने उन्हें भूखा, बीमार और ठण्ड में कांपते देखा तो उसने उनकी ज़िन्दगी की कहानी को दूसरों के साथ सांझा किया.



पाब्लो उन लोगों के संगठन में भरती हुआ जो न्याय के लिए लड़ रहे थे. उसने आज़ादी के लिए संघर्ष करते सभी मजदूरों के सम्मान में कवितायें लिखीं.

कभी-कभी उसकी कवितायें पढ़कर नेताओं को गुस्सा भी आता था. परन्तु पाब्लो उस वजह से चुप नहीं होता था. आखिर वो लोगों का कवि जो था.



जब सैनिक पाब्लो को पकड़ने आये तो वो अपने दोस्तों के घरों में जा छिपा और फिर घोड़े पर सवार होकर चिली की पहाड़ियों पर चला गया.

